

1) 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।
 एक हिस्सा भारत को दिया गया और दूसरा
 हिस्सा पाकिस्तान को दिया गया।
 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।
 एक हिस्सा भारत को दिया गया और दूसरा
 हिस्सा पाकिस्तान को दिया गया।

2) 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।
 एक हिस्सा भारत को दिया गया और दूसरा
 हिस्सा पाकिस्तान को दिया गया।

3) 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।

4) 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।
 एक हिस्सा भारत को दिया गया और दूसरा
 हिस्सा पाकिस्तान को दिया गया।

5) 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ और
 भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया गया।
 एक हिस्सा भारत को दिया गया और दूसरा
 हिस्सा पाकिस्तान को दिया गया।

किसी व्यक्ति जिसमें हमें कुछ भी अनुभूति
करती है उसे हमें खा जाने का अनुभव
होता है। कुछ के अनुसार कुछ एवं कुछ
के कोई अनुभव नहीं है। कुछ के अनुसार
अनुभव बहुतों के विचार में अत्यन्त एवं
अविशिष्ट रहता है। संभवतः संसार मात्र
में अनुभव रहा है ऐसी अवस्था में
मानव मनाने का अनुभव कहाँ है,
इसका के कुछ प्रकारों की ओर संकेत करता
है। अतः हमें कुछ के इस विचार को
आवश्यकता का होना और उसे आरंभ
प्राप्तियों ने प्रीति विचार ही आवश्यक
विचार के प्रयोगों में परिपूर्ण माना है।

कौट के इस मत को जर्मन के
समकालीन लार्ड निकोल सोपन द्वारा भी
समर्थित है। उन्होंने संसार के कुछों पर
अविश्वस्य वस्तु दिया है इस लिए कुछ दार्शनिक
उसे निराशावादी कहते हैं। निराशावाद के
अनुसार विश्व आशा के वजह निराशा के
भावों को पनपने में अत्यन्त अधिक विवश
होता है। कुछ ने कुछ निराशा के परम श्रुति माना
है। कुछ निराशा विषय निवर्ण कहाँ
जाता है। जीवन का आदर्श है इसलिए
कौट दार्शनिक का निराशावादी कहना गलत
है। हम उनका दृष्टि कर सकते हैं कि कौट दार्शनिक
का अत्यन्त निराशावाद है, परन्तु उनके
आशावाद में होता है।